आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय, पटना के तृतीय दीक्षांत समारोह के अवसर पद **माननीय कुलाधिपति–सह–राज्यपाल, बिहार, श्री राम नाथ कोविन्द जी,** का अभिभाषण

दिनांक 10.09.2016, स्थान–आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय, पटना, समय–11.00 बजे पूर्वाह्न

बिहार राज्य के शिक्षा मंत्री श्री अशोक कुमार चौधरी जी, विज्ञान एवं प्रावैधिकी मंत्री श्री जय कुमार सिंह जी, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली के अध्यक्ष प्रो॰ वेद प्रकाश जी, आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ॰ (प्रो॰) समरेन्द्र प्रताप सिंह जी, विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति, डॉ॰ एस॰एम॰ करीम जी, संस्थापक–कुलपति प्रो॰ (डॉ॰) एस॰ एन॰ गुहा जी, आमंत्रित अतिथिगण, मीडिया प्रतिनिधिगण, विश्वविद्यालय के पदाधिकारी एवं कर्मी, अभिभावकगण, छात्रों, देवियों एवं सज्जनों!

आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय के 'तृतीय दीक्षांत समारोह' में शामिल होकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। आज का दिन आप सभी छात्रों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण दिन है। आपकी प्रतिभा एवं परिश्रम के परिणाम–स्वरूप उपाधियाँ देकर आज आपको सम्मानित किया गया है। इन उपाधियों के सहारे आप देश–विदेश में बिहार एवं भारत का नाम ऊँचा करेंगे। आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय, बिहार राज्य का एक ऐसा विश्वविद्यालय है, जिसमें विशेष रूप से चिकित्सा, अभियंत्रण एवं अन्य आधुनिक विधाओं की शिक्षा दी जाती है। इन क्षेत्रों के विकास से ही राष्ट्र का विकास सम्भव है। चिकित्सा एवं

अभियंत्रण के क्षेत्र में निरंतर शोध की आवश्यकता को देखते हुए नवीनतम तकनीक की सहायता लेनी होगी, ताकि विश्व में भारत श्रेष्ठ स्थान हासिल कर सके।

किसी भी विश्वविद्यालय की मान्यता एवं प्रतिष्ठा उसके द्वारा किये जा रहे शोध के कारण होती है। मुझे बताया गया है कि आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय भी राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शोध को बढ़ावा देने के लिए निरंतर प्रयासरत है। इसी क्रम में आर्यभट्ट नैनोविज्ञान एवं नैनोप्रोद्योगिकी केन्द्र (ए॰सी॰एन॰एन॰) की स्थापना की गई है जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के शोध हो रहे हैं।

मुझे जानकारी दी गई है कि शिक्षण एवं शोध के कार्यों के लिए विश्वविद्यालय में 'सेंटर फॉर रिवर स्टडीज', 'पाटलीपुत्रा सेंटर फॉर इकोनॉमिक्स' एवं 'सेंटर फॉर जर्नालिज्म एण्ड मास कम्यूनिकेशन' को स्थापित करने की दिशा में कार्य प्रगति पर है। शोध–कार्यों की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए हमारे वर्तमान विद्वान राष्ट्रपति माननीय श्री प्रणब मुखर्जी जी ने हाल ही में कहा था कि –

> ''एक शीर्ष उच्च शिक्षण संस्थान होने के लिए कुछ बुनियादी शर्त्तों का पालन करने की आवश्यकता है। सबसे महत्वपूर्ण है कि हम शिक्षा और अनुसंधान की गुणवत्ता सुनिश्चित करें, शिक्षण के स्तर को विकसित

करें तथा अन्तर्राष्ट्रीय और अन्य स्वदेशी संगठनों के साथ अपनी संस्थाओं के सम्बन्ध स्थापित करें। अकादमिक उत्कृष्टता के साथ–साथ, मूल मानवीय सभ्यता के प्रमुख मूल्यों, यथा – राष्ट्रभक्ति, करूणा, ईमानदारी, सहिष्णुता, कर्तव्य– परायणता और महिलाओं के प्रति सम्मान का भाव हमारी उच्च शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य होना चाहिए।''

वस्तुतः ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ रही दुनियाँ में निरन्तर शोध–कार्यों की सफलता ही हमें उन्नति के शिखर पर ले जा सकती है।

मेरा सुझाव है कि राज्य के विश्वविद्यालय अपनी परिकल्पना के अनुरूप शिक्षण को अध्यापन–कक्षाओं और प्रयोगशालाओं से निकाल कर उपयोगिता और व्यावहारिकता के धरातल पर लाने के लिए प्रयास आरम्भ करें, जिससे परम्परागत एवं नवीन व्यवसाय तथा जीविका के साधन, यथा–खेती, व्यापार, चिकित्सा, अभियंत्रण, शिक्षण इत्यादि को लोगों की आवश्यकताओं के अनुरूप एवं विकासपरक बनाया जा सके। यह विश्वविद्यालय शिक्षा को 'क्लासरूम' तथा 'लैब' से निकालकर उद्योग की आवश्यकता के अनुरूप बनाने के लिए प्रयासरत है, एवं यहाँ आवश्यकतानुसार तकनीकी शिक्षा एवं मौजूदा पाठ्यक्रम को समय–समय पर

अद्यतन किया जा रहा है, यह अच्छी बात है। यह संस्था शिक्षा को राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरीय बनाने हेतु प्रयत्नशील है और हमें आशा है कि ज्ञान की इस पावन बिहार की धरती पर, हमारे प्रयत्न निश्चय ही सफल होंगे।

राज्य में आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय की स्थापना होने से बिहार के छात्रों एवं छात्राओं को तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न विश्वविद्यालयों में अलग–अलग समय पर आयोजित होनेवाली परीक्षाओं एवं सत्र की अनियमितता से हो रही परेशानियों से मुक्ति मिली है। तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में इस विश्वविद्यालय में समय पर कदाचार–मुक्त परीक्षाओं के आयोजन एवं उनके परीक्षाफल के प्रकाशन के लिए मैं विश्वविद्यालय के कुलपति एवं पदाधिकारियों को धन्यवाद देता हूँ।

मुझे यह उम्मीद है कि भविष्य में भी यह विश्वविद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में ऊँचाइयों को छूयेगा और देश ही नहीं विश्व स्तर पर अपने शोध एवं शैक्षणिक नवाचारपूर्ण कार्यों के लिए जाना जाएगा।

आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय की स्थापना का उद्देश्य बिहार के शिक्षा–जगत् में सिर्फ सकारात्मक परिवर्तन लाना ही नहीं था, अपितु यहाँ के छात्रों के ज्ञान एवं बौद्धिक स्तर को ऊँचा उठाने एवं उनके उत्कृष्ट भविष्य–निर्माण को ध्यान में रखकर भी इसकी स्थापना की गई थी। यह विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा के क्षेत्र में

मूल्य आधारित रचनात्मकता एवं अभिनव गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने की दिशा में सतत् प्रयत्नशील है।

आज व्यक्ति का सम्पूर्ण जीवन प्रतिस्पर्धाओं से भरा हुआ है। प्रतिस्पर्धाओं के तनाव से उबरने का सबसे बेहतर तरीका यही है कि आदमी परिश्रम करे और आत्मविश्वासपूर्वक जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हुए निरन्तर आगे बढ़ते रहने का प्रयास करे।

इस प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय के लक्ष्य एवं उद्देश्यों की पूर्ति यहाँ के शिक्षकों के सार्थक प्रयास के बिना सम्भव नहीं है। मुझे विश्वास है कि इस विश्वविद्यालय के सभी शिक्षक अपनी पूरी योग्यता और क्षमता का उपयोग कर अपने विद्यार्थियों को उत्कृष्ट रूप से लाभान्वित कर रहे होंगे।

कुलपति डॉ॰ (प्रो॰) समरेन्द्र प्रताप सिंह के अनुभवी नेतृत्व में विश्वविद्यालय शिक्षा एवं शोध के क्षेत्र में नई ऊँचाइयों को हासिल करे एवं भविष्य में भी निरन्तर विकास के नये अध्याय जोड़ सके, यह मेरी मंगलेच्छा है।

आज छात्रों को कौशल–विकास के साथ–साथ सामाजिक मूल्यों एवं नैतिक उत्थान पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है, तभी समाज एवं देश की तरक्की समग्र रूप से संभव हो सकेगी। कौशल–उन्नयन और तकनीकी ज्ञान व्यक्ति को भौतिक समृद्धि

और निपुणता प्रदान करते हैं, जबकि नैतिकता मनुष्य का चारित्रिक उन्नयन और आत्मिक परिष्कार करती है। भौतिक वैभव और आध्यात्मिक विकास – दोनों भारतवर्ष की गरिमा की पुनर्स्थापना के लिए आवश्यक हैं। स्वामी विवेकानन्द का कथन है कि ''हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है, जिससे चरित्र–निर्माण हो, मानसिक शक्ति बढ़े, बुद्धि विकसित हो और देश के युवक अपने पैरों पर खड़ा होना सीखें।''

एक और बात, जो मैं आप सभी छात्रों से कहना चाहता हूँ, वह यह है कि आप सभी विकास के साथ–साथ न्याय, सामाजिक समानता, धार्मिक सहिष्णुता एवं करूणा को अपनाकर अपना चारित्रिक विकास करें।

आज के सुअवसर पर सभी उत्तीर्ण स्नातक छात्रों को मैं बधाई देता हूँ एवं उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामना करता हूँ। मैं चाहता हूँ कि आप सेवा के जिस भी क्षेत्र में जायें, वहाँ आपकी शैक्षणिक योग्यता आपकी पूरी मददगार सिद्ध हो। आपने शैक्षणिक सफलता हासिल कर ली है और भविष्य में आगे भी कई अन्य महत्वपूर्ण पड़ाव आपके जीवन में आने–वाले हैं। मुझे उम्मीद है, आपके द्वारा अर्जित शिक्षा, अनुभव, संस्कार और ज्ञान आपके स्वर्णिम सपनों को साकार करने में सहायक होंगे। राष्ट्र और समाज को आपसे काफी आशाएँ हैं। आप दृढ़निश्चयी बनें,

परिश्रमी बनें, प्रतिभावान बनें – मेरी समस्त शुभकामनाएँ आपके साथ हैं।

मैं एक बार पुनः समस्त आर्यभट्ट विश्वविद्यालय–परिवार को ऐसे भव्य आयोजन के लिए बधाई देता हूँ। आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद !

जय हिन्द !

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।